माननीया राज्यपाल–सह–झारखण्ड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का राँची विश्वविद्यालय के 32वाँ दीक्षांत समारोह के पावन अवसर पर अभिभाषण

राँची विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव, सिनेट, सिंडिकेट एवं विद्वत परिषद् के सदस्यगण, सभागार में उपस्थित शिक्षाविद्, पदाधिकारीगण, शिक्षकेतर कर्मचारीगण, अभिभावकगण, प्रेस एवं मीडिया के प्रतिनिधिगण और इस समारोह के मुख्य आकर्षण के केन्द्र मेरे प्रिय और विद्यार्थियों!

सर्वप्रथम मैं राँची विश्वविद्यालय के 32वाँ दीक्षान्त समारोह के इस ऐतिहासिक अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देती हूँ। विशेषकर, उन विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को जो आज उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। विभिन्न परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों द्वारा उपाधि ग्रहण करने का यह समारोह उनके जीवन का अविस्मरणीय क्षण तो है ही, साथ ही अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायक, उत्साहवर्द्धक और नवीन आशाओं का संदेशवाहक भी है।

हमारा देश युवाओं का देश है। युवाओं से इस राष्ट्र एवं समाज को अत्यन्त अपेक्षायें हैं। इसलिए वे स्वयं में निहित रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करें। युवा देश के वर्तमान ही नहीं, भविष्य भी हैं। ऐसे में शिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे समर्पित भाव से हमारे छात्र–छात्राओं को शिक्षा प्रदान करे। वे उनके लिए उसी प्रकार का भाव रखे जैसा कि स्वयं के संतान के प्रति रखते हैं। अपने विद्यार्थियों को इस

योग्य बनाने का प्रयास करें कि हमारे विद्यार्थी वैश्वीकरण के इस युग में अपना बेहतर स्थान सुनिश्चित कर सके।

कला–संस्कृति, खेल, ज्ञान–विज्ञान एवं शोध के विभिन्न क्षेत्रों में भी हमारे झारखण्ड राज्य के युवाओं ने विशिष्ट पहचान बनायी है। कला–संस्कृति हमारी धरोहर है, हमारी अनमोल विरासत है। कला–संस्कृति का बन्धन व्यक्ति को इन्सान बनाता है, हमें बेहतर से बेहतरीन बनने की दिशा देता है, हमारी बुनियाद को मजबूती देता है, हमारे व्यक्तित्व को आकार देता है। जब हम अपने सर्वोत्तम का साझा करते हैं, तभी उसका विस्तार होता है। विस्तार ही विकास है – इसी विकास को गति देना समय की माँग है। कला–संस्कृति युवाओं के भविष्य के साथी हैं, जीवन मूल्यों और आदर्शों को नया करने के साथ–साथ यह उनके कौशल–विकास में भी सहायक है। अपनी भाषा, अपनी जमीन, अपना जमीर, अपने मूल एवं अपनी परम्परा से जुड़े रहें युवा, क्योंकि यही हमारी जड़ है। जड़ से कटकर क्या हमारा अस्तित्व बच पायेगा? विकास का एक कदम आसमानी ऊँचाई को प्राप्त करने की ओर बढ़े पर दूसरा कदम धरा की धार के साथ रहे। विकास एकांगी न हो, एकपक्षीय न हो, सिर्फ भौतिक विकास पर्याप्त नहीं, जरूरत है आत्मिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास की। आपसे हमारी यही कामना है।

शिक्षा हमारे व्यक्तित्व में अन्तर्निहित सर्वोत्तम का प्रकाशन करती है। "Knowledge is Power" निश्चित रूप से ज्ञान की विपुल शक्ति हमारी मजबूती है पर जरूरी यह भी है कि ज्ञान की यह रोशनी हमें आत्मकेन्द्रित न बना दे, भौतिक सुखवादी एवं भोगवादी बनकर हम आत्ममुग्धता की स्थिति में न

रहें, बल्कि हमारी चिन्ता एवं चिन्तन में सामाजिक प्रतिबद्धता एवं राष्ट्रीय दायित्व बोध को भी भरपूर जगह मिले। ठीक ही कहा गया है – 'युवा मन, युवा तन और युवा जन, देश के हैं, ये ही अमूल्य धन'। इसी अनमोल धन को संजोए-संवारे रखना समय की माँग है। समय, जो सबसे बड़ा है, सर्वाधिक मूल्यवान है। समय का सम्मान करना जरूरी है। जो समय का सम्मान करता है, समय भी उसका सम्मान करता है, सही समय पर सही निर्णय लेने पर हमारी योजना या कामना का सफर सफल होता है- इसलिए सावधान रहें, सचेत रहें, सचेष्ट रहें, समय की दस्तक को सुनने में चूक न हो, क्योंकि समय के पास इतना समय नहीं होता कि बार-बार किसी को समय दे सके।

चुनौतियों से भरा है हमारा समय, हमारा समाज, विसंगतियों से भरा है हमारा परिवेश। प्रतिकूल परिस्थितियों का दंश हम कब तक सहते रहें, क्यों सहते रहें? प्रतिकूलता को अनुकूलता में तब्दील करने के लिए आप सफल व शिक्षित युवा सरकार की आँख बनें, मस्तिष्क बनें, दिशा-निर्देशक की भूमिका निभायें, जरूरत है जिम्मेवारी की बोध शक्ति बढ़ाने की, परिपक्वता को अपनाने की, तार्किकता को समृद्ध करने की, नेतृत्व क्षमता विकसित करने की, बड़ी भूमिका निभाने का साहस बटोरने की निश्चित रूप से विश्वास और आत्मविश्वास की यह रोशनी ऐसे भव्य आयोजनों से मिल सकेगी। यह रोशनी आपमें है, क्योंकि आप शिक्षित हैं, जागरूक हैं, स्वप्नदर्शी हैं। मात्र अक्षर ज्ञान शिक्षा नहीं, डिग्रियाँ बटोरना मात्र ही शिक्षा के उद्देश्य को तृप्त नहीं करता, बल्कि हमारे चिन्तन एवं सोच के क्षितिज को विस्तार देना भी शिक्षा का परम लक्ष्य है।

विश्व स्तर पर पर भारत की अपनी अलग और विशिष्ट पहचान है। सभी हमारे देश की ओर सम्मान एवं उम्मीद भरी दृष्टि रखते हैं। विकास-पथ के पथिक आप बनें, क्योंकि आप ही देश की ताकत हैं। जरुरत है यह जानने की कि हम कौन हैं? हम अपने भीतर छुपी क्षमता एवं प्रतिभा का आकलन कर सकें। यह प्रतियोगिताओं का युग है। अपने को स्थापित करने का नायाब अवसर देती हैं, प्रतियोगिताएँ। पर कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता, हौसले के आगे कोई पर्दा नहीं होता, दिल में जज्बा हो कुछ कर दिखाने का, तो जलते दिये को भी आँधियों का डर नहीं होता। जिन्दगी ठहराव और गति के बीच का संतुलन है। यह सोच भी सच है कि मैं किसी से बेहतर करुँ, क्या फर्क पड़ता है, पर मैं किसी का बेहतर करुँ तो बहुत फर्क पड़ता है।

राँची विश्वविद्यालय राज्य का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। ख्याति प्राप्त आचार्यों द्वारा उत्कृष्ट शिक्षा देना एवं विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में गतिशील रहना विश्वविद्यालय की परंपरा भी रही है और खूबी भी। राज्य के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व एवं ज्ञान के विकास में यह विश्वविद्यालय अपना अमूल्य योगदान अपने स्थापना काल से ही देता आ रहा है। यह उपलब्धि भी इसकी गौरवशाली परंपरा में शामिल है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लगातार नये-नये रोजगारपरक विषयों को विभिन्न पाठ्यक्रमों में समावेश कर यह विश्वविद्यालय सफलता का नया सार्थक इतिहास रच रहा है। उत्कृष्ट अकादमिक उपलब्धियों के साथ कला-संस्कृति एवं खेल के इलाके में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने का साक्षी रहा है इसका अतीत और वर्तमान। हमारे छात्र-छात्राओं की प्रतिभाओं से स्थापित

कीर्तिमानों ने राज्य का मान बढ़ाया है। यह हम सबके लिए गर्व–गौरव की बात है। बेहतर से बेहतरीन करने का यह सिलसिला हमेशा बना रहे– यह मेरी कामना है।

उपाधि प्राप्त करने वाले विधार्थियों को एक बार पुनः मेरी हार्दिक बधाइयाँ।

आप अपने जीवन में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर अपना परचम लहरायें और सुखद लक्ष्य पथ पर अग्रसर हों।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!